ललिताम्बा ऐश्वर्य लक्ष्मी साधनायें

प्रत्येक साधक की यही इच्छा रहती है कि नववर्ष के प्रथम दिवस से ही सांसारिक गृहस्थ जीवन में श्रेष्ठता आनी प्रारम्भ हो जाये। इस हेतु **चैत्रिय नवरात्रि से प्रारम्भ होने वाले नूतन वर्ष 2078 के प्रथम दिवस से ही प्रारम्भ होने वाले शक्ति पर्व का पूर्ण रूप से उपयोग करें,** उसके प्रत्येक दिन को एक विशेष ध्यान से उपयोग में लाये, नूतन वर्ष की प्रथम नवरात्रि का प्रत्येक दिवस एक उत्सवमय स्वरूप होता है। अत: ऐसे पर्व पर दिव्य **शक्ति चक्र** जो नूतन दिवसों में जागृत रहता है, उसे आत्मसात् करने का भाव चिन्तन होना चाहिये।

अन्य दिनों में साधक, साधना करने में जितना प्रयास, जितना तपोबल, जितना मंत्र जप करता है उसका शतांश भी इन दिनों में उपयोग करता है तो उसे साधना में सफलता प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता। भगवती दस महाविद्याओं की साधना का स्वरूप ठीक उसी प्रकार है, जिस प्रकार एक श्रेष्ठ भवन की मजबूत नींव स्थापित करना। यह साधना नूतन वर्ष स्वरूप में जीवन निर्माण की साधना है जो यदि पूर्ण रूप से मजबूत है तो चाहें कितने भी तुफान क्यों न आये, झटके लगे, विपरित स्थितियां आये, पूरे वर्ष भर किसी भी स्वरूप में अहित नहीं हो सकता है क्योंकि इसका आधार साधक व दस महाविद्या स्वरूप सद्गुरू की चेतना होती है।

हमारे जीवन में निरन्तर युद्ध रूपी विषम नाग-पाश और संदेह होते है, उसमें नवरात्रि हमें अपने आप को पुन: विषम स्थितियों से पूर्ण रूपेण निजात प्रदान करने का अवसर प्रदान करती है, कि हम जाग्रत होकर **आद्या शक्ति** से एकाकार हो जाये। कलीयुग में मनुष्य जीव में अहंकार रूपी अंधकार, विपरीत विचार, कुबुद्धि कभी भी उत्पन्न हो जाते है और उन दुर्गुण रूपी राक्षसों को तत्काल समाप्त करने की आवश्यकता है, इसलिये प्रत्येक नवरात्रि से पहले एक महालय आता है, जिसका तात्पर्य है कि महाविनाश। **ऐसे समय में भीतर की विनाशकारी शक्तियों को नष्ट करने का शुभ अवसर नवरात्रि है और नवरात्रि में साधना सम्पन्न कर अपने आप को पुन: सर्व शक्तिमय बनाने का भाव चिन्तन है।**

यह पूरा रचना क्रम जो संहार और उत्पत्ति का क्रम, व्यक्ति के जीवन में निरन्तर चलता रहता हैं। दुर्गा के नव स्वरूप इस रचनात्मक प्रक्रिया के भाग है, जो हमारे भीतर एक-एक क्रम का निर्माण करते हुये हमारा पुन: निर्माण करते है। **हमारे पास शस्त्र रूपी संकल्प, संस्कार व ज्ञान ही है। ये विचार**

संस्कार और ज्ञान से निर्मित होते है और जब जीवन में विनाशकारी विचारों को नष्ट करने की भावना आ जाती है, तो आद्या शक्ति स्वयं हमारे भीतर प्रवेश करती है, जिससे हम पुनः आंतरिक और बाह्य रूप से दिव्य भावों को आत्मसात् कर पाते है।

प्रत्येक मनुष्य का जीवन बहुआयामी होता है। इस जीवन में ही विभिन्न प्रकार के रंग, तरंग, उमंग है तो कभी हताशा-निराशा, परेशानी भी है। जहाँ जीवन में सुख है तो दुःख भी है जीवन में पीड़ा है तो आनन्द भी है। ये सारी स्थितियाँ मनुष्य को विचलित भी करती है और ज्यादातर व्यक्ति अपने जीवन में अपनी बाधाओं का समाधान नहीं कर पाते, जिससे उन्हें स्थितियों में अनुकूलता प्राप्त नहीं होती है। अतः इन सब बाधाओं तथा समस्याओं को अनुकूल बनाने का पर्व ही नवरात्रि है।

शक्ति का तात्पर्य केवल बल ही नहीं है वरन् शक्ति एक भाव है जो आपके सामर्थ्य को प्रकट करता है, जिस प्रकार चन्द्रमा का सम्बन्ध चांदनी से है, दीपक का सम्बन्ध प्रकाश से है, यदि दीपक नहीं तो प्रकाश नहीं, इसी प्रकार शक्ति नहीं तो क्रियायें भी नहीं, अतः यदि श्रेष्ठता को आत्मसात् करना है तो शक्ति की आराधना तो करनी ही पड़ेगी।

जो दुर्बल है उसका जीवन तो व्यर्थ है, जो अपने सामर्थ्य से शक्ति आराधना करता है उसका घर धन-धान्य, पुत्र, स्त्री, लक्ष्मी से कभी रिक्त नहीं हो सकता इसी प्रकार शक्ति तो सबल के घर पराक्रम रूप में, विद्वानो के हृदय में बुद्धि रूप में, सज्जन लोगों में श्रद्धा के रूप में निवास करती है, शक्ति का साकार रूप सब जगह, सब में है। इसकी साधना-आराधना से ही जाग्रत किया जा सकता है।

नवरात्रि का यह विशेष पर्व अपने भीतर से अज्ञानता, दोष, कमियां निकाल बाहर कर अपने भीतर शक्ति भरने का पर्व है। यदि संसार विपत्ति सागर है, तो उसमें से पूर्ण रूप से बाहर निकलने के लिये शक्ति समर्थ होना ही पड़ेगा, अपने भीतर शक्ति सामर्थ्य भरना पड़ेगा, यह शक्ति ही अपने अलग-अलग रूपों में विद्यमान हो कर साधक के कार्य सम्पन्न करती है।

त्रिपुर सुन्दरी साधना

जो व्यक्ति अपने जीवन मे त्रिपुर सुन्दरी की साधना कर उनकी कृपा प्राप्त कर पाता है वह व्यक्ति अपने जीवन में **सर्व विजयश्री** से युक्त होता है, क्योंकि यह शक्ति शिव स्वरूप में **इच्छा, ज्ञान, क्रिया** तीनों स्वरूपों को पूर्णता प्रदान करने वाली है। अक्सर ज्ञान और लक्ष्मी का मेल नहीं होता है। व्यक्ति ज्ञान प्राप्त कर लेता है, तो वह लक्ष्मी की कृपा प्राप्त नहीं कर सकता है जबकि यह सत्य नहीं है क्योंकि बिना ज्ञान के लक्ष्मी को आत्मसात् नहीं किया जा सकता।

त्रिपुर सुन्दरी की साधना, जो कि श्री विद्या की भी साधना है, स्पष्टतः जो व्यक्ति पूर्ण एकाग्रचित होकर यह साधना सम्पन्न करता है, उसे शारीरिक, मानसिक रोग, और भय नहीं रहता है, वह दरिद्रता व मृत्यु रूपी स्थितियों का संहार करता है। साधक जीवन में पूर्ण रूप से धन, यश, आयु, भोग और मोक्ष को प्राप्त करता है।

यह शक्ति वास्तव में त्रिशक्ति स्वरूपा है। त्रिपुर सुन्दरी साधना कितनी महान साधना है, इसके बारें में **'वामकेश्वर तंत्र'** में लिखा है- **जो व्यक्ति यह साधना जिस मनोभाव से करता है, उसका वह मनोभाव पूर्ण होता है।** काम की इच्छा रखने वाला व्यक्ति पूर्ण कामदेव अनंग शक्ति प्राप्त करता है, धन व विद्या की इच्छा रखने वाला व्यक्ति पूर्ण धनी व विद्वानमय श्रेष्ठता से युक्त होता है।

यह साधना करने वाला व्यक्ति कामदेव के समान तेजस्वी हो जाता है और वह साधारण व्यक्ति न रहकर **लक्ष्मीवान, पुत्रवान** होता है। उसे वशीकरण की विशेष शक्ति प्राप्त होती है, उसके भीतर एक विशेष आत्मशक्ति का विकास होता है और उसके जीवन में पाप संताप का क्षय हो जाता है। वाणी की सिद्धि प्राप्त होती है और उसको समस्त देव शक्तियों की स्थिती प्राप्त होती है और व्यक्ति इस जीवन में ही देवमय स्थितियों से युक्त होता है।

साधना विधान

प्रातः काल स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर पूजा स्थान में संकल्प भाव के साथ अपनी मनोकामना व्यक्त करते हुये तीन आचमनी जल ग्रहण करे। अपने सामने एक बाजोट पर **लाल वस्त्र** बिछाकर **'त्रिपुर सुन्दरी महायंत्र' कामदेव अनंग जीवट** और **दस महाविद्या त्रिभुवन मोहिनी माला** स्थापित कर पंचोपचार पूजन कर त्रिपुर सुन्दरी का ध्यान करे।

बालार्कद्युतितेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं
नानालंकृतिराजमानवपुषं बालोडुराट्शेखराम।
हस्तैरिक्षुधनुः सृणिं सुमशरं पाशं मुदा विभ्रतीं
श्री चक्रस्थित सुन्दरी त्रिजतामाधारभूतां स्मरेत्॥

पूर्ण शांत भाव से प्रत्येक कामना के साथ एक-एक माला **दस महाविद्या त्रिभुवन मोहिनी माला** से निम्न मंत्र का **7 माला** सप्त कामनाओं की पूर्ति हेतु जप करें-

मंत्र

॥ श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं सर्व त्रिपुर सुन्दरीये आगच्छ नमः ॥

नित्य रात्रि काल में 13 अप्रेल से 21 अप्रेल तक निरन्तर उक्त विधान से मंत्र जप करने से सर्व सुकामनाओं की पूर्णता की ओर क्रियाशील हो सकेंगे। नवरात्रि की पूर्णता के बाद सम्पूर्ण सामग्री को किसी मंदिर या गुरू चरणों में अर्पित करें।

न्यौछावर ₹ 600/-